BHDC - 132

मध्यकालीन हिंदी कविता

MOST IMPORTANT TOPICS FOR EXAMS

MUST WATCH TO SCORE GOOD MARKS IN HINDI

PART-1

Scholarly Minds

भक्तिकाव्य

भक्ति' शब्द की निष्पति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- सेवा कराना। लेकिन इसका अर्थ सिर्फ 'सेवा' शब्द तक ही सीमित नहीं है। भक्ति में ईश्वर का भजन, पूजा, प्रीति और अर्पण सभी शामिल हैं।

दूसरे शब्दों में, भक्ति ईश्वर के प्रति भक्त के प्रेम की अभिव्यक्ति है।

'भक्ति' की परिभाषा नारद ने अपने 'भक्ति सूत्र' में की है उनके अनुसार, 'सा त्वस्मिन् परमप्रेमरूपा। अमृतस्वरूपा च ।' अर्थात् भक्ति भगवान के प्रति परम प्रेमरूपा है और अमृतस्वरूपा है। भक्ति में ईश्वर के प्रति गहरी अनुरक्ति (प्रेम) पर विशेष बल दिया गया है। भक्ति का यह केंद्रीय भाव है और ईश्वर के प्रति इसी उत्कट प्रेम को हम सभी भक्त कवियों में समान रूप से देख सकते हैं।

भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ:

- **ईश्वर प्रेम**: भक्ति काव्य का मुख्य तत्व भगवान के प्रति गहरी भक्ति और प्रेम होता है। इसमें भक्त अपने व्यक्तिगत अनुभवों और आस्थाओं के माध्यम से भगवान से जुड़ने की कोशिश करता है।

रामचरितमानस में भगवान राम के प्रति भक्तों का गहरा प्रेम और समर्पण दर्शाया गया है। तुलसीदास ने राम के चरित्र को आदर्श और प्रेरणा के रूप में प्रस्तुत किया है, जो भक्तों को भगवान के प्रति अनन्य प्रेम की ओर प्रेरित करता है।

- **साधारण भाषा का प्रयोग**: भक्ति काव्य में आम जनता की भाषा का प्रयोग किया जाता है ताकि आम लोग भी उसे आसानी से समझ सकें और उससे जुड़ सकें। संस्कृत के बजाय क्षेत्रीय भाषाओं जैसे हिंदी, कन्नड़, तमिल आदि में लिखे गए काव्य इसके उदाहरण हैं।

संत तुकाराम के अभंग में मराठी भाषा का प्रयोग किया गया है, जिससे आम जनता को आसानी से समझ में आए। उनके अभंगों में भगवान विटोबा के प्रति श्रद्धा और भक्ति की गहरी भावना व्यक्त की जाती है।

- **सामाजिक समता**: भक्ति काव्य में जाति, लिंग, वर्ग आदि के भेदभाव को नकारा गया है। इसमें भगवान से समानता का आह्वान किया जाता है, जिससे समाज में समानता की भावना उत्पन्न होती है।

संत कबीर ने भक्ति काव्य के माध्यम से जाति-पाती के भेदभाव को नकारा। उनके दोहे सभी मनुष्यों को एक समान समझते हैं और यह संदेश देते हैं कि ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति ही सबसे महत्वपूर्ण है।

- **आध्यात्मिक उन्नति**: भक्ति काव्य का उद्देश्य मानव को आत्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करना है। यह आत्मा के शुद्धिकरण और भगवान के साथ एकात्मता की प्रक्रिया को दर्शाता है।

- **प्रकृति का चित्रण**: भक्ति काव्य में भगवान के गुण, रूप और लीला का वर्णन किया जाता है, और कभी-कभी इसमें प्रकृति का भी सुंदर चित्रण होता है, जो भक्त के भावनात्मक अनुभवों को प्रकट करता है।

सूरदास ने अपने पदों में कृष्ण की बाल लीलाओं और प्राकृतिक दृश्यों का सुंदर चित्रण किया है। उदाहरण स्वरूप, सूरदास के पदों में वृंदावन की झील, बृजभूमि, और कृष्ण की गोवर्धन की लीला को बहुत ही प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया गया है।

- **निर्गुण और सगुण भक्ति**: भक्ति काव्य में दो प्रमुख प्रकार की भक्ति देखने को मिलती है—निर्गुण भक्ति (जहां भगवान को निराकार रूप में माना जाता है) और सगुण भक्ति (जहां भगवान को साकार रूप में पूजा जाता है)।

कबीर ने निर्गुण भक्ति को अपनाया, जिसमें ईश्वर को निराकार और निरबाध रूप में पूजा गया। वहीं मीराबाई ने सगुण भक्ति की, जहां भगवान कृष्ण के साकार रूप का पूजन हुआ।

- **संगीत और काव्य का मिश्रण**: भक्ति काव्य अक्सर गीतों और भजनों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें काव्य और संगीत का सुंदर संयोजन होता है।

- **साधना और तपस्या**: भक्ति काव्य में साधना, तपस्या और भगवान के प्रति समर्पण की भावना प्रबल होती है। यह आत्मसमर्पण और आत्मविश्वास का प्रतीक होता है।

मीराबाई की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

मीराबाई की भक्ति-भावना पर प्रकाश:

मीराबाई भारतीय संत और कवयित्री थीं, जो अपनी भक्ति और कृष्ण के प्रति असीम प्रेम के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी भक्ति-भावना अद्वितीय थी, और उन्होंने अपने काव्य और गीतों के माध्यम से श्री कृष्ण के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा और प्रेम को व्यक्त किया।

Scholarly Minds

मीराबाई की भक्ति-भावना के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

1. श्री कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम:

मीराबाई की भक्ति मुख्य रूप से श्री कृष्ण के प्रति उनके अटूट प्रेम और समर्पण पर आधारित थी। उन्होंने कृष्ण को अपने जीवन का एकमात्र सुख और सर्वोत्तम प्रेमी माना। उनके लिए कृष्ण ही एकमात्र ईश्वर थे, और उनका हर रूप—बालक, यौवन, और प्रेमी—सभी रूपों में भगवान के प्रति प्रेम दिखाया गया है।

- **उदाहरण**: "मोरी नयनवा में कृष्ण बसे हैं।"
  यह भाव व्यक्त करता है कि मीराबाई के लिए कृष्ण उनके दिल और आँखों में बसते थे, और उनका जीवन उनके बिना अधूरा था।

2. भक्ति और आत्मसमर्पण:

मीराबाई ने अपनी भक्ति को एक साधना के रूप में अपनाया और अपना जीवन कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया। उनके भजन और गीत आत्मसमर्पण की भावना से ओत-प्रोत हैं। वे कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति में इतनी डूबी हुई थीं कि उन्हें संसार की सभी सांसारिक चीज़ों से कोई लेना-देना नहीं था।

- **उदाहरण**: "मैं तो सिरी कृष्ण के दीवानी हूँ, हर श्वास में कृष्ण का ही ध्यान करती हूँ।"

3. सगुण भक्ति का प्रचार:

मीराबाई की भक्ति का मुख्य रूप सगुण भक्ति था, यानी भगवान को साकार रूप में पूजा जाना। उन्होंने श्री कृष्ण को अपने प्रियतम के रूप में पूजा और उनके रूप, लीलाओं और गुणों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया। वे श्री कृष्ण को अपने जीवन का सबसे बड़ा प्रेमी मानती थीं।

- **उदाहरण**: "पधारो मेरे मख़न मायकाजी"
  यह गीत मीराबाई के कृष्ण के प्रति प्रेम और भक्तिभावना का आदर्श उदाहरण है, जहां वे कृष्ण को अपने घर आने के लिए बुलाती हैं, जैसे एक प्रेमिका अपने प्रियतम को बुलाती है।

4. सामाजिक और पारिवारिक विरोध के बावजूद भक्ति की आस्था:

मीराबाई ने भक्ति को अपना जीवन मार्ग बनाया, हालांकि उनके पारिवारिक जीवन में कई विरोध थे। उनके पति, ससुराल और समाज ने उनकी भक्ति का विरोध किया, लेकिन मीराबाई ने कभी भी कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति में कोई कमी नहीं आने दी। उन्होंने सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक दबावों के बावजूद अपनी भक्ति की राह पर चलते हुए कृष्ण के प्रेम में पूरी तरह समर्पण किया।

- **उदाहरण**: मीराबाई के भजनों में समाज और परिवार के विरोधों के बावजूद कृष्ण के प्रति उनकी श्रद्धा और अडिग आस्था का स्पष्ट चित्रण मिलता है।

5. प्राकृतिक और सांसारिक बंधनों से परे प्रेम:

Scholarly Minds

मीराबाई की भक्ति में एक महत्वपूर्ण तत्व यह था कि उनके लिए कृष्ण के प्रेम में कोई भी भौतिक या सांसारिक बंधन नहीं था। उनका कृष्ण के प्रति प्रेम शुद्ध और निर्विकार था। वे अपने भगवान के साथ आत्मीय संबंध में विश्वास करती थीं, न कि केवल एक उपास्य ईश्वर के रूप में।

- **उदाहरण**: "कृष्ण का प्रेम एक प्यास है, जिसे पूरी दुनिया में कोई भी नहीं बुझा सकता।"

तुलसीदास का जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

तुलसीदास का जीवन परिचय:

तुलसीदास (1532-1623) हिंदी साहित्य के महान कवि, संत और भक्त थे, जिन्होंने भक्ति साहित्य में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले के राजापुर नामक गांव में हुआ था। वे एक ब्राह्मण परिवार से थे और उनका वास्तविक नाम रामबोला था। बचपन में ही उनके माता-पिता का निधन हो गया, जिससे वे काफी प्रभावित हुए। तुलसीदास का जीवन संघर्षपूर्ण था, लेकिन उन्होंने अपना जीवन राम के प्रति अडिग भक्ति और समर्पण में अर्पित किया।

तुलसीदास की भक्ति यात्रा में श्री राम के प्रति उनका प्रेम और समर्पण प्रमुख था। उन्होंने अपनी ज़िंदगी को भगवान राम के चरणों में समर्पित किया और राम के आदर्शों को लोगों तक पहुँचाने के लिए अपनी रचनाएँ लिखीं। तुलसीदास का मानना था कि भक्ति मार्ग ही जीवन का सर्वोत्तम मार्ग है और व्यक्ति को अपने आंतरिक जीवन में राम के गुणों और उपदेशों को अपनाना चाहिए।

तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ:

1. **रामचरितमानस**:
    - **रामचरितमानस** तुलसीदास की सबसे प्रसिद्ध रचना है। यह ग्रंथ संस्कृत में लिखे गए *रामायण* का अवधी भाषा में पद्य रूपांतरण है। इस काव्य में भगवान राम की जीवन गाथा, उनके आदर्श, और उनकी रचनाओं के माध्यम से भक्ति और धर्म का प्रचार किया गया है।
    - इस काव्य में राम की जन्म, उनकी पत्नी सीता के साथ उनकी पराक्रम भरी यात्रा, रावण का वध, और उनके द्वारा स्थापित आदर्शों का विस्तृत वर्णन किया गया है। रामचरितमानस ने भारतीय समाज में राम के चरित्र को आदर्श के रूप में स्थापित किया।
    - तुलसीदास ने इसे सरल भाषा में लिखा, जिससे यह आम लोगों तक पहुँच सके।
2. **हनुमान चालीसा**:
    - **हनुमान चालीसा** तुलसीदास की एक और प्रसिद्ध रचना है। इसमें हनुमान जी के 40 श्लोकों के माध्यम से उनकी महिमा, शक्तियों और उनके राम भक्त होने के गुणों का वर्णन किया गया है। यह काव्य भक्तों के बीच एक अत्यधिक लोकप्रिय है और इसे बहुत से लोग नियमित रूप से पाठ करते हैं।
    - हनुमान चालीसा का उद्देश्य भक्तों को हनुमान जी के प्रति श्रद्धा और विश्वास में वृद्धि करना था। इसमें हनुमान जी के साहस, शक्ति और भगवान राम के प्रति अडिग भक्ति की महिमा का उल्लेख है।
3. **दोहावली**:

Scholarly Minds

- **दोहावली** तुलसीदास द्वारा लिखित एक काव्य संग्रह है, जिसमें वे जीवन के विविध पहलुओं पर दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार करते हैं। इसमें उन्होंने कई शिक्षाप्रद दोहों और छंदों के माध्यम से जीवन की सच्चाइयों और भक्ति के महत्व को बताया।
- दोहावली में तुलसीदास ने राम के आदर्शों को लेकर जीवन के विभिन्न पक्षों पर ध्यान आकर्षित किया है। यह रचनाएँ विशेष रूप से साधारण जन को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए थीं।

4. **विनय पत्रिका**:
   - **विनय पत्रिका** तुलसीदास की एक अन्य महत्वपूर्ण काव्य रचना है, जिसमें उन्होंने भगवान राम, हनुमान जी, शिव, और अन्य देवी-देवताओं से प्रार्थना की है। इसमें भक्तों की भक्ति और आत्मसमर्पण की भावना को प्रमुख रूप से व्यक्त किया गया है।
   - इसमें तुलसीदास ने भगवान से अपनी आत्मा को शुद्ध करने, समर्पण करने और भगवान के साथ एकात्मता की प्रार्थना की है। यह रचना भक्तों को आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरित करती है।
5. **कवितावली**:
   - **कवितावली** तुलसीदास की एक और प्रमुख काव्य रचना है, जिसमें उन्होंने राम, कृष्ण और अन्य देवताओं के विषय में गीत, भजन, और कविताएँ लिखी हैं। इसमें राम के जीवन और गुणों के बारे में गहरे भाव व्यक्त किए गए हैं।
6. **रामाश्तकशती**:
   - **रामाश्तकशती** तुलसीदास की एक छोटी रचना है, जिसमें राम के आठ नामों का वर्णन किया गया है। प्रत्येक नाम के माध्यम से राम के अलग-अलग रूपों और गुणों का विचार किया गया है।

तुलसीदास की भक्ति भावना:

तुलसीदास की भक्ति भावना राम के प्रति असीम प्रेम और समर्पण से प्रेरित थी। उनका जीवन और उनके काव्य साहित्य राम के आदर्शों को फैलाने के लिए समर्पित था। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से यह संदेश दिया कि भक्ति से ही जीवन में शांति और सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है। तुलसीदास के लिए राम के प्रति प्रेम और भक्ति जीवन का सर्वोत्तम मार्ग था। उनका विश्वास था कि भगवान राम के नाम का जप करने से आत्मा का उद्धार होता है और व्यक्ति जीवन के सभी दुखों से मुक्त हो जाता है।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए ।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून ॥

यहाँ पानी शब्द का प्रयोग तीन बार हुआ है और तीनों बार उसका अर्थ भिन्न है।

तीन अर्थ है- प्रतिष्ठा (मनुष्य के पक्ष में)

चमक (मोती के पक्ष में),

जल (चूने के पक्ष मे)

Scholarly Minds

रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में 'विनम्रता' से है।

मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए।

पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं।

तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है।

रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे के बिना संसार का अस्तित्व नहीं हो सकता, मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है उसी तरह विनम्रता के बिना व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं हो सकता।

मनुष्य को अपने व्यवहार में हमेशा विनम्रता रखनी चाहिए।

कबीर कूता राम का, मुतिया मेरा नाऊँ। राम की जेवड़ी, जित खेचै तित जाऊँ ॥

कबीर कहते हैं कि मैं तो राम का कुत्ता हूँ, और नाम मेरा मुतिया है। मेरे गले में राम की ज़ंजीर पड़ी हुई है, मैं उधर ही चला जाता हूँ जिधर वह ले जाता है। प्रेम के ऐसे बंधन में मौज-ही-मौज है।

Scholarly Minds